मेवाड़ राजवंश–वर्णन संस्कृत साहित्य के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. सुनीता शर्मा

सहायकाचार्य
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर
23–24, विद्या नगर, सेक्टर–4
हिरण मगरी, उदयपुर

संस्कृत भाषा में प्रणीत काव्यों में नायक के पूर्वजों के नाम परिगणन अथवा कीर्तिवर्णन के साथ काव्य का श्रीगणेश करने की प्राचीनकाल से परम्परा रही है। कतिपय काव्यों में उनका नामोल्लेख मात्र होता है तो अन्यों में उनके प्रबल प्रताप और कर्तव्य का सुविस्तृत यशोगान मिलता है। प्रायः यह भी देखा गया है कि वंश की मर्यादा का उल्लंघन करने वाले अपने वंश को कलंकित करने वाले अथवा क्षीणपौरुष वाले शासकों के नाम वंशावलियों में से निकाल दिये जाते हैं। राजस्थानी रजवाड़ों में विरचित संस्कृत एवं अन्य भाषा–काव्यों में भी इसी परम्परा का पालन होता आया है।

महाराणा राजसिंह के राज्यकाल में महाराणा राजसिंह के चरित्र को आधार बनाकर रचे गये काव्यों में राजप्रशस्ति महाकाव्य एवं अमरकाव्य दोनों के प्रणेता रणछोड़ भट्ट तथा राजरत्नाकर के प्रणेता सदाशिव नागर ने भी इस परम्परा का निर्वाह करते हुए राणा राजसिंह के पूर्वजों के नाम अथवा वंशावली को अपने काव्यों में स्थान दिया है।

ये वंशावलियां पौराणिक और ऐतिहासिक दो भागों में विभाजित की जा सकती हैं। पौराणिक से तात्पर्य रामायण, महाभारत एवं भागवतादि पुराणों से गृहीत नामावली और ऐतिहासिक से तात्पर्य इतिहास सम्मत ग्रंथों, शिलाभिलेखों, राजकीय अभिलेखों, चारण–भाटों द्वारा परम्परा से लिखी जाती रही राजाओं की वंशावलियों, पीढ़ियावलियों, ख्यातों से संबंधित अभिलेखों तथा उन शासकों की मुद्राओं द्वारा प्रमाणित स्रोतों से है।

पौराणिक वंशावली

रणछोड़ भट्ट ने राजप्रशस्ति महाकाव्य में महाभारत के आधार पर महाभारत के पूर्व के राजाओं का वंशक्रम नारायण से वृहद्बल तक उद्धृत करना कहा है और उसके पश्चात् महाभारत काल से सुमन्त्र तक का वंशक्रम भागवत के आधार पर देने का संकेत दिया है।

ततो महस्वाँस्तस्याभूद्विश्वसाह्वप्रसेनजित्।
व ततस्ततस्तक्षकोऽस्माबृहद्बल इतित्वयम्।। 2/23 (राजप्रशस्तिः)

महाभारतसंग्रामे निहितस्त्वभिमन्युना।
एते त्वतीता व्यासेन संप्रोक्ता भारते नृपाः ।। 2/24 (राजप्रशस्तिः)

अनागतान् जगादैवं व्यासस्तत्र वदामि तान् ।

बृहद्बलाद्बृहद्रणस्तस्योरूक्रिय इत्यतः ।। 2/25 (राजप्रशस्तिः)

रणछोड भट्ट के कथन के परीक्षण की दृष्टि से **महाभारत और भागवत में प्रदत वंशावलियों के साथ राजप्रशस्ति की तुलनात्मक तालिका नीचे दी गयी है।**

राजप्रशस्ति	महाभारत	भागवत पुराण	हरिवंश पुराण (रिवल भाग महाभारत)
नारायण	नारायण (आदिपर्व 17/11–13)	परम पुरूष परमात्मा	
ब्रह्मा	ब्रह्मा (आदि पर्व 1/55–57)	ब्रह्मा	
मरीचि	मरीचि (आदिपर्व 65/10, 66/4)	मरीचि	
कश्यप	कश्यप (आदिपर्व 65/10–11, 75/10)	कश्यप	
विवस्वान्	विस्वान् (आदिपर्व 65/15, 75/11)	विवस्वान्	
मनु	मनु (आदिपर्व 75/12)	श्राद्धदेव मनु	मनु
इक्ष्वाकु	इक्ष्वाकु (आदिपर्व 75/15–16)	इक्ष्वाकु	इक्ष्वाकु (वैवस्वत्)
विकुक्षि (शशाद)	शशाद (वनपर्व 202/1–2)	विकुक्षि (शशाद)	विकुक्षि (शशाद)
पुरंजय (ककुत्स्थ)	ककुत्स्थ (वनपर्व 202/1–2)	पुरंजय (ककुत्स्थ)	ककुत्स्थ
टनेना	अनेना (वनपर्व 202/2)	टनेना	टनेना
पृथु	पृथु (वनपर्व 202/2–3)	पृथु	पृथु
विश्वरंधि	विश्वगश्व (वनपर्व 202/2–3)	विश्वरंधि	विष्टराश्व
चन्द्र	अद्रि (वनपर्व 202/3)	चन्द्र	आद्रः
युवनाश्व	युवनाश्च (वनपर्व 202/3)	युवनाश्व	युवनाश्व
शावस्त	श्रावस्थ (श्राव) (वनपर्व 202/4–5)	शावस्त	श्रावस्त
वृहदश्व	बृहदश्व (वनपर्व 202/4–5)	वृहदश्व	वृहदश्व
कुवलयाश्व (धुंधुमार)	कुवलाश्व (वनपर्व 202/7–8) मधुकैटभ के पुत्र धुंधु को मारने के कारण धुंधुमार (वनपर्व 204/32)	कुवलाश्व	कुवलाश्व
दृढ़ाश्व	दृढाश्व (वनपर्व 204/40)	दृढाश्व	दृढाश्व
हर्यश्व	हर्यश्व	हर्यश्व	हर्यश्व
निकुंभ	निकुंभ	निकुंभ	निकुंभ
वर्हणाश्व	वर्हणाश्व	वर्हणाश्व	संहताश्व
कृशाश्व	कृशाश्व	कृशाश्व	कृशाश्व
सेनजित	सुदयुम्न	सेनजित	प्रसेनजित
युवनाश्व	युवनाश्व (वनपर्व 42/41)	युवनाश्व	युवनाश्व
मान्धाता (त्रसदस्यु)	मान्धाता (वनपर्व 42/41)	मान्धाता	मान्धाता
पुरूकुत्स	पुरूकुत्स (सभापर्व 8/13, आश्रम पर्व 20/12–13)	पुरूकुत्स	पुरूकुत्स
त्रसदस्यु	त्रसदस्यु (सभा पर्व 8/9, वनपर्व 98/13–14, वनपर्व 98/16, अनुशासन पर्व 165/55)	त्रसदस्यु	त्रसदस्यु
अनरण्य	अनरण्य (आदिपर्व 1/236, अनुशासनपर्व 115/59)	अनरण्य	संभूत
हर्यश्व	हर्यश्व (उद्योगपर्व 115/20–21, 116/16–17, 116/20)	हर्यश्व	सुधन्वा
अरूण	अरूण	अरूण	त्रिधन्वा
त्रिबंधन	त्रिबंधन	त्रिबंधन	त्र्यारूण
सत्यव्रत (त्रिशंकु)	त्रिशंकु (आदिपर्व 71/34, सभापर्व 12/10)	त्रिशंकु (सत्यव्रत)	सत्यव्रत (त्रिशंकु)
हरिश्चन्द्र	सत्यव्रत हरिश्चन्द्र	हरिश्चन्द्र	हरिश्चन्द्र (त्रैशंकव)
श्रोहित	श्रोहित	श्रोहित	रोहित
ळरित	ळरित	ळरित	हरित
चंप	चंचु	चंप	चञ्चु
सुदेव		सुदेव	सुदेव/विजय
विजय	सुदेव/विजय	विजय	विजय
भरूक	रूरूक	भरूक	रूरूक
वृक्	वृक् (अनुशासनपर्व 115/63)	वृक	वृक
बहुक	बहु	बहुक	बाहु
सगर	सगर (आदिपर्व 1/234, सभापर्व 8/19, वनपर्व 47/19, 106/7–16, 18 से 107/11 तक 107/33, 39–43)	सगर	सगर
असमंजस	असमंजस (वनपर्व 107/39–43, शांतिपर्व 57/7–9)	टसमंजस	पञ्चजन
अंशुमान	अंशुमान (अनुशासनपर्व 107/56–58, 61, 64, 66)	अंशुमान	अंशुमान
थ्दलीप	दिलीप (अनुशांसनपर्व 107/63/69)	थ्दलीप	दिलीप
भगीरथ	भगीरथ (वनपर्व 25/12, 107/69, 108 अध्याय)	भगीरथ	भगीरथ
श्रुत	श्रुत	श्रुत	श्रुत
नाभ	नाभाग अम्बरीष	नाभ	नाभाग अंबरीष
सिंधुद्वीप		सिंधुद्वीप	सिंधुद्वीप
अयुतायु	अयुतायुत	अयुतायु	अयुताजित
ऋतुपर्ण	ऋतुपर्ण (वनपर्व 66/21–22, 60/25, 67/5–7)	ऋतुपर्ण	ऋतुपर्ण
सर्वकाम	सर्वकर्म (शांतिपर्व 49/76–77)	सर्वकाम	आर्तुपर्णि (ऋतुपर्ण का अपत्यार्थक)
सुदास	सुदास (आदिपर्व 175/1, अनुशासनपर्व 78/1, 2)	सुदास	सुदास

मित्रसह (कल्माषपाद)	कल्माषपाद (मित्रसह अनुशासन पर्व 137/18, शांतिपर्व 234/30)	सौदास	सौदास (कल्माषवाद, मित्रसह)
अश्मक	अश्मक (सर्वकर्मा) (आदिपर्व 176/47, 176/49)	अश्मक	अनरण्य
मूलक		मूलक (नारिकवच) (पृथ्वी के क्षत्रिय विहीन होने पर वंश का मूलक प्रवर्तक)	निघ्न
दशरथ	दशरथ (इलविता का पुत्र एडविड) (वनपर्व 274/6)	दशरथ	अनमित्र
एडविड	–	एडविड	दुलिदुह
विश्वसह	–	विश्वसह	–
खट्वांग	खटवांग (इल्विला के पुत्र दिलीप का अपरनाम) (द्रोणपर्व 61/1–11)	खटवांग (चक्रवर्ती)	दिलीप
दीर्घबाहु दिलीप	दिलीप (अरपनाम खटवांग)	दीर्घबाहु	–
रघु	रघु (आदिपर्व 1/232, शान्तिपर्व 166/78)	रघु	रघु (अयोध्या सम्राट)
टज	अज (वनपर्व 274/6)	टज	अज
दशरथ	दशरथ (वनपर्व 274/6)	दशरथ	दशरथ
श्राम	राम (वनपर्व 274/6–9)	श्राम	राम
कुश	–	कुश	कुश
अतिथि	–	अतिथि	अतिथि
निषध	निषध	निषध	निषध
न्ल	नभ	नभ	नभ
		न्ल	नभ
पुंडरीक	–	पुंडरीक	पुंडरीक
क्षेमधन्वा	–	क्षेमधन्वा	क्षेमधन्वा
देवानीक	–	छेवानीक	देवानीक
टहीन	–	टहीन	अहिनगु
पारियात्र	–	पारियात्र	सुधन्वा
ब्ल	–	बलस्थल	अनल
स्थल	–	–	उक्थ
वज्रनाभ	–	वज्रनाभ	वज्रनाभ
संगण	–	खंगण	शंख (व्युषिताश्व)
विधृति	–	विधृति	–
हिरण्यनाभ	–	हिरण्यनाभ	–
पुष्प	–	पुष्प	पुष्प
ध्रुवसिद्धि	–	ध्रुवसिद्धि	अर्थसिद्धि
सुदर्शन	–	सुदर्शन	सुदर्शन
अग्निवर्ण	–	अग्निवर्ण	अग्निवर्ण
शीघ्र	–	शीघ्र	शीघ्र
मरूत्	–	मरू	मरू
प्रसुश्रुत	–	प्रसुश्रुत	–
संधि	–	संधि	–
मर्षण	–	अमर्षण	–
महस्वान्	–	महस्वान्	–
विश्वसान्ह	–	विश्वसान्ह्व	–
प्रसेनजित	–	प्रसेनजित	–
तक्षक	–	तक्षक	–
बृहद्बल	बृहद्बल (महाभारत संग्राम में अभिमन्यु द्वारा मारा गया)	बृहद्बल	–

सीसोद वंशावली में मेवाड़ के राजवंश को भगवान राम के पुत्र लव की वंश परम्परा में बताते हुए लव के पुत्र अतिथि खेबंध (क्षेमधन्वा), नभ, पुंडरीकाष (पुंडरिकाक्ष), देवानीक, अनी अहीन), पारजात (पारियात्र), बल, सुथल, वज्रनाभ, हरण्यनाभ, द्रुवासंधि (ध्रुवसंधि), सुदत (सुदर्शन), अग्न्यावरण (अग्निवर्ण), मुरत (मरुत), अमरषण, महेस्वान, वसुसाह (विश्वसाह्न), प्रसेनजीत, नागणजीत (तक्षक) ने अयोध्या में राज किया।[1]

राजप्रशस्ति और भागवत पुराण

वृहद्बल के उपरान्त रणछोड़ भट्ट ने इस वंश के राजाओं के नाम भागवत् पुराण के नवम स्कन्ध से ग्रहण किये हैं। वे इस प्रकार हैं[2] –

राजप्रशस्ति	भागवत्पुराण
वृहद्रण	वृहद्रण
उरूक्रिय	उरूक्रिय
वत्सवृद्ध	वत्सवृद्ध
प्रतिव्योम	प्रतिव्योम
भानु	भानु
दिवाक (वाहिनीपति)	सेनापति दिवाक

स्हदेव	वीर सहदेव
वृहदश्व	बृहदश्व
भानुमान	भानुमान
प्रतीकाश्व	प्रतीकाश्व
सुप्रतीक	सुप्रतीक
मरूदेव	मरूदेव
सुनक्षत्र	सुनक्षत्र
पुष्कर	पुष्कर
अन्तरिक्ष	अन्तरिक्ष
सुतपा	सुतपा
मित्रजित	अमित्रजित
वृहद्भ्राज	वृहद्राज
वर्हि	बर्हि
कृतञ्जय	कृतञ्जय
रणंजय	रणञ्जय
संजय	संजय
शाक्य	शाक्य
शुद्धोद	शुद्धोद
लंगल	लांगल
प्रसेनजित्	प्रसेनजित्
क्षुद्रक	क्षुद्रक
रूणक	रणक
सुरथ	सुरथ
सुमित्र	सुमित्र
(यहाँ तक इक्ष्वाकु वंश चला) 122 राजा हुए	(कलियुग में यह वंश समाप्त हो गया)

राजप्रशस्ति की नामावली और पौराणिक नामावली में अंतर

इन नामावलियों के अध्ययन से स्पष्ट है कि रणछोड़ भट्ट ने नारायण से वृहद्बल तक की, जिस नामावली का ग्रहण महाभारत से करने का उल्लेख किया है, वह महाभारत से न लेकर भागवत से ग्रहीत की गई है। भागवत से नाम ग्रहण में भी रणछोड़ भट्ट से कई नामों में अशुद्धियाँ हो गई हैं। कहीं उन्होंने एक ही नाम के दो खण्ड करके दो नाम बना लिये हैं, तो कहीं संधि विच्छेद के समय नामों में अंतर कर दिया है, और कहीं उपनाम या विशेष्यता सूचक शब्दों को भी दो अलग–अलग नाम मान कर पिता पुत्र के रूप में उद्धृत कर दिया है। कहीं नामों में वर्ण–विपर्यय के कारण भी अन्तर आ गया है। कहीं–कहीं पांडुलिपियों में लिपि–दोष के कारण भी नामों में अंतर दिखाई देता है। यथा –

महाभारत में पृथु के पुत्र का नाम विश्वगश्व[3] दिया गया है किंतु भागवत पुराण में उसे विश्वरंध्रि बना दिया गया है, राजप्रशस्तिकार रणछोड़ भट्ट ने महाभारत के भागवत में परिवर्तित नाम को ग्रहण किया है। विश्वगश्व के पुत्र अद्रि[4] को भागवत में परिवर्तन करके चन्द्र बना दिया। राजप्रशस्ति में भी चन्द्र नाम को ही लिया गया है।[5]

महाभारत के श्रावस्त[6] को शावस्त, चंचु को चंप, रुरुक को भरूक, सर्वकर्म को सर्वकाम रूप दे दिया गया है। अश्मक का पुत्र मूलक था जिसे भागवत पुराण में परशुराम के द्वारा क्षत्रिय विहीन की गयी पृथ्वी पर क्षत्रिय–नारियों ने छिपा कर परशुराम के क्रोध से बचाया था। अतः वह नारीकवच कहा जाता था। वह एकमात्र क्षत्रियों का मूल पुरुष रह गया। अतः उसको मूलक नाम दिया गया। हरिवंश पुराण में उसके स्थान पर निघ्न नाम मिलता है। जो परशुराम के द्वारा निधन होने से बच गया। महाभारत में अश्मक का पुत्र दशरथ इल्विला का पुत्र होने से एलविल या एडविड भी कहा गया है, पर भागवत और तदनुसार राजप्रशस्ति में

एडविड को दशरथ का पुत्र बताया गया है। इसी प्रकार खट्वांग और दीर्घबाहु दिलीप की स्थिति है। दिलीप का ही अपरनाम खट्वांग है, पर भागवत और तदनुरूप राजप्रशस्ति में दिलीप को खट्वांग का पुत्र कहा गया है।[7]

भागवत में बल स्थल एक ही व्यक्ति का नाम है, पर रणछोड़ भट्ट ने बल और स्थल शब्दों में दो भिन्न नामों की कल्पना करके उन्हें पिता और पुत्र की संज्ञा दे दी है। भागवत के खंगण (षंगण) नाम को संगण बना दिया है। प्राचीन लिपियों में मूर्धन्य ष और ख दोनों का एक रूप ष होने से यह भ्रम हुआ प्रतीत होता है। हरिवंश पुराण (महाभारत खिल भाग) में यह शंखव्युषिताश्व है। इसी प्रकार भागवत में आये नाम ध्रुवसंधि, को ध्रुवसिद्धि और अमर्षण को मर्षण में परिवर्तित कर दिया गया है। महाभारत में आये बृहद्बल के उपरान्त भागवत से लिये गये सुमित्र तक के नाम रणछोड़ भट्ट ने ठीक ही दिये हैं, पर एक दो स्थानों पर इसमें भी अशुद्धियाँ रह गई हैं। यथा – अमित्रजित के स्थान पर मित्रजित्, बृहद्राज के स्थान पर बृहद्भ्राज और रणक के स्थान पर रूणक, अमर्षण के स्थान पर मर्षण इत्यादि अनेकत्र इस प्रकार के परिवर्तन परिलक्षित होते हैं।

राजप्रशस्ति में मेवाड़ के राजवंशावली के रूप में जो पौराणिक वंशावली दी गई है, उसे रणछोड़ भट्ट ने ही दो भागों में विभाजित करके प्रस्तुत किया है। महाभारत के आधार पर दिये गये नाम मनु से बृहद्बल तक महाभारत युद्ध से पूर्व के हैं, और बृहद्बल के उपरान्त बृहद्रण से सुमित्र तक के नाम महाभारत लेखन के पश्चात् के हैं अर्थात भागवत पुराण की रचना के बाद के, जिसको कि वेदव्यास की ही रचना कहा गया है।[8] पर यह मान्यता संदिग्ध है। कारण भागवत में वेदव्यास के नाम से भविष्य कथन के आधार पर तीस पीढ़ियों के नाम दिये हैं। अतः यह स्पष्ट है कि भागवत की रचना महाभारत के हजारों वर्षों बाद हुई होगी। इतने दूर तक के भावी राजाओं की भविष्यवाणी करना किसी भी मनुष्य के लिये संभव नहीं कहा जा सकता। यह मात्र एक पुराण लेखन की शैली है। भविष्यपुराण इसका एक और उदाहरण है। यही कारण है कि पुराणों को विश्वसनीय प्रमाण के रूप में नहीं माना जा सकता है।

इनमें से प्रथम भाग में उद्धृत नामों की सूची को हम नामावली मात्र कह सकते हैं, क्योंकि इसमें नामों की संख्या निश्चित नहीं है और न वंश क्रम ही व्यवस्थित है। यह अव्यवस्था भागवत में ही नहीं विष्णुपुराण, भविष्यपुराण आदि में दी गई पीढ़ियों के आधार पर भी देखी जा सकती है। स्वयं महाभारत के आदिपर्व में ही सूक्ष्म और विस्तृत नाम से एकदूसरे के समीप उपलब्ध दो वंशावलियों में ही तेरह पीढ़ियों का अंतर इसका साक्षी है। एक वंशावली में तीस पीढ़ियाँ और दूसरी में 43 पीढ़ियाँ उद्धृत हैं। इन वंशावलियों में पिता और पुत्र के नामों का भी ठिकाना नहीं है।[9] यहाँ तक कि महाभारत और महाभारत का ही अंग माने जाने वाले खिल भाग के नामों में भी पर्याप्त अंतर मिलेगा। वस्तुतः पुराणकाव्य किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं है, इसमें तो अनेक लेखकों ने अपनी–अपनी परिकल्पनाओं को मूर्तरूप देने का प्रयास किया है। वस्तुतः पुराण अर्थात् प्राचीन कथ्य को केवल काव्य की दृष्टि से ही परखना चाहिए, ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं। यद्यपि पुराण प्राचीन इतिहास स्वीकार किये जाते हैं क्योंकि इनमें इतिहास का भी अंश होता है परन्तु परिकल्पित नामों में

ऐतिहासिक व्यक्ति का अन्वेषण करना नितरां कठिन है। ऐसी स्थिति में प्रसिद्ध नामों को भले ही ऐतिहासिक स्वीकार किया जाय परन्तु अधिकांश नाम नाममात्र होते हैं। महाभारत के सूर्यवंश और चंद्रवंश की पीढ़ियों का अध्ययन करने पर हमें इस अव्यवस्था का और भी ठीक से पता लगता है। अतः यही कहा जा सकता है कि महाभारत और भागवत से गृहीत की गई मेवाड़ की वंशावली को हम मात्र नामावली कह सकते हैं।

महाभारत और भागवत के ये नाम वास्तव में वेदों के रहस्यों पर प्रकाश डालने वाले नाम हो सकते हैं। जैसा कि महाभारत और भागवत दोनों ही घोषणा करते हैं[10]–

"इतिहासपुराणाभ्याम् वेदः समुपबृहयेत्"

इतिहास और पुराणों के द्वारा वेद का उपवृंहण (विस्तार) देना चाहिये।

"भारत–व्यपदेशेन ह्याम्नायार्थश्च दर्शितः"

पुराणों में इतिहास के बहाने वेदों के रहस्यों को खोजा गया है।

वंशावली निर्धारण में सीसोदवंशावली का योग

सुमित्र के उपरान्त वज्रनाभ से सिंहस्थ तक के नामों के मूल स्रोत का पता नहीं चलता है, जहाँ से रणछोड़ भट्ट ने ये नाम ग्रहण किये होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि रणछोड़ भट्ट ने इसके लिए राजवंश की स्थानीय वंशावलियों या ख्यातों का लाभ लिया होगा। रणछोड़ भट्ट के द्वारा अमरकाव्य और राजप्रशस्ति महाकाव्यों की संरचना प्रारंभ करने के समय वि. सं. 1718 से पूर्व की अज्ञात कर्तृक "सीसोद वंशावली" नाम की एक वंशावली प्राप्त होती है, जो महाराणा राजसिंह के ही काल में उनके राज्यासीन होने के प्रारंभ के ही वर्षों में वि. सं. 1714 के आस–पास लिखी गई थी।[11] प्राप्त उक्त वंशावली को यथावत् ग्रहण करके रणछोड़ भट्ट ने अपने काव्य में महाराणा राजसिंह के प्रारंभिक वर्षों तक का वर्णन संस्कृत भाषा में निबद्ध किया है। रणछोड़ भट्ट ने सुमित्र के उपरान्त अयोध्या में राज करने वाले बाद के राजाओं के नाम निम्न प्रकार दिये हैं –

वज्रनाभ – महारथी – अतिरथी – अचलसेन – कनकसेन – महासेन – अंग – विजयसेन – अजयसेन – अभंगसेन – मदनसेन – सिंहरथ।[12]

रणछोड़ भट्ट के अनुसार सिंहरथ के पुत्र विजय ने दक्षिणदेश के राजाओं पर विजय प्राप्त कर अयोध्या को छोड़ दिया और दक्षिण में रहने लग गया और आकाशवाणी के आधार पर राजा की उपाधि त्याग कर आदित्य की उपाधि धारण की।[13] सीसोदवंश की वंशावली में यह नामावली इस प्रकार दी है – राजा समंत्र (सुमंत्र) के उपरान्त राजा नाभ (वज्रनाभ) महारथी, अतिरथी, चलसेन (चतुर्बाहु), कनकसेन, महासेन, अंग (अंग), वीजसेन (विजयसेन), अभंगसेन, संधिरथ (सिंहरथ) अंतिम राजा संधिरथ के पुत्र विजयभूप को सूर्य देवता ने

दक्षिण देश जाने का आदेश दिया किन्तु वह अयोध्या में ही सोमवंशी राजा सोमनंदन से युद्ध करते हुए मारा गया। इसी सिसोद वंशावली में विजयभूप के स्थान पर उसके पुत्र पद्मादित्य के द्वारा दक्षिण देश की विजय और वहाँ निवास करना कहा गया है।

प्रतीत होता है कि सीसोद वंशावली में भाषा की अस्पष्टता के कारण रणछोड़ भट्ट भी विभ्रमित हो गये और उन्होंने विजयभूप के द्वारा दक्षिण विजय और आवास का उल्लेख कर दिया है। पुराणकवि भावावेश में जो कुछ ठीक प्रतीत होता है उसी को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान कर इतिहास को भी पुराण बना देते हैं। अतः ये सभी वर्णन परस्पर विरोधाभासी हो गये है।

राजप्रशस्ति महाकाव्य में कवि ने विजयादित्य के वंशक्रम में क्रमशः पद्मादित्य, शिवादित्य, हरदत्त, सुजसादित्य, सुमुखादित्य, सोमदत्त, शिलादित्य, केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य, देवादित्य, आशादित्य, कालभोजादित्य और ग्रहादित्य के नामों का उल्लेख किया हैं। इसी ग्रहादित्य के वंशज उसके नाम से बाद में गहलोत कहलाये।[14] सीसोदवंशावली में संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ ठीक इसी क्रम में पद्मादित्य के वंश के राजाओं की सूची ग्रहादित्य तक दी है। सीसोदवंशावली में सोमादित्य का वर्णन करते हुए इसके अज्ञात लेखक तिलपुरपाटण अपरनाम सूर्य–सुस्त्रुष–सुखपुरी को उसकी राजधानी बताते हैं। "रावलराणा जी री वात" में गोदावरी के तट पर विजयपुर पाटण नाम के नगर को सोमादित्य की राजधानी बताया है।[15]

शिलादित्य और ग्रहादित्य का वंशावली में विस्तार से वर्णन दिया गया है। अमरकाव्य में रणछोड़ भट्ट ने उक्त राजाओं से संबंधित वर्णन अक्षरशः उक्त सीसोद वंशावली से मेल खाता है। ठीक यही वर्णन "रावल राणा जी री वात" में भी मिलता है।[16] अतः यह स्पष्ट है कि रणछोड़ भट्ट का आधार उक्त वंशावली और उस काल के चारणों–भाटों द्वारा रचित अन्य वंशावलियां ही रही हैं। तुलना की दृष्टि से उनका वर्णन यथा स्थान किया जायेगा। एकलिंग माहात्म्य (पुराण) में भी ग्रहादित्य से पूर्व के नामों में केशव, नागाराउल, भोगाराउल, असाधर, श्रीदेव या महादेव के नामों का उल्लेख प्राप्त होता है।[17]

सूर्यवंशी राजाओं की काव्यगत वंशावलियों का तुलनात्मक अध्ययन

राजप्रशस्ति	अमरकाव्य	राजरत्नाकर	एकलिंगपुराण / माहात्म्य
विजय (आदित्य)			शिवशर्मा / विजयादित्य
पद्मादित्य			
शिवादित्य			
हरदत्त			
सुजसादित्य			
सुमुखादित्य			
सोमदत्त			
शिलादित्य	शिलादित्य		
केशवादित्य	केशवादित्य (वैजवापायनगोत्र)		केशव
नागादित्य	नागादित्य		नागा राउल
भोगादित्य	भोगादित्य		भोगा राउल
देवादित्य	देवादित्य		
आशादित्य	आशादित्य		असाधर
			श्रीदेव / महोदव
कालभोजादित्य	कालभोजादित्य		
ग्रहादित्य	ग्रहादित्य	गुहदत्त	गुहदत्त
वाष्प	वाष्प (वाप्प)	वाष्प	(बाप्पा)

		कालभोज	कालभोज / भोज
खुमाण	खुम्माण	खुम्माण	सुषुमाण (खुम्माण)
गोविन्द	गेविंद	गोविंद	गोविन्द
महेन्द्र	महेन्द्र	–	
टालु	आलु (अल्लट)	आलू	आलु
सिंह वर्मा	सिंह	–	विश्वनाथ
शक्ति कुमार	–	शक्ति कुमार	शक्तिकुमार
शालिवाहन	–	शालिवाहन	शालिवाहन
न्रवाहन	–	नरवाहन	नरवाहन
टंबाप्रसाद	–		अंबाप्रसाद
कीर्तिवर्मा	–	कीर्तिवर्मा	कीर्तिवर्मा
नरवर्मा	–		नरवर्मा
न्रपति	–		नरपति
उत्तम	–		
भैरव	–		
श्री पुंजराज	–		
कर्णादित्य	–	कर्ण	कर्ण
भावसिंह	–	जादूक	भादूक
गोत्रसिंह	–	गातडि	गातडि
ळंसराज	–	हंसराज	हंस
शुभयोगराज	–	योगराज	योगराज
वैरड	–	वैतड	वैरड
वैरिसिंह	–	वैरिसिंह	श्रीपुंज
	–	कर्ण	कर्ण
	–	जितसिंह	चरणमल्ल क्षेत्रप
त्जसिंह	–	तेजसिंह	तेजसिंह
स्मरसिंह	–	समरसिंह	खंगार, अमरसिंह
	–		समरसिंह,
	–		सुबाहु
श्रतनसिंह	–	रतनसिंह	रत्नसिंह
कर्ण (रावल)	–	कर्णसिंह	कर्ण
राहप (राणा)	श्राहप	राहप	राहप
न्रपति	न्रपति	हरसू	जितसिंह
	थ्दनकर	–	तेजसिंह
			समरसिंह
जसकर्ण	जसकर्ण	यशकर्ण	–
नगपाल	नगपाल	नाकपाल	–
पुण्यपाल	पूर्णपाल	पूर्णमल्ल	–
पृथ्वीमल्ल	पृथ्वीमल्ल	पृथ्वीमल्ल	–
भुवनसिंह	भुवनसिंह	भवनसिंह	–
भीमसिंह	भीमसिंह	भीमसिंह	–
जयसिंह	जयसिंह	जयसिंह	जयसिंह
लक्ष्मसिंह (गढमंडलीक)	लक्ष्मसिंह (गढमंडलीक)	लखमसी	लक्ष्मीसिंह / लक्ष्म्यसिंह
		अरिसिंह	(अ) रसी राणो अरिसिंह
हम्मीर	हम्मीर	हमीर	हम्मीर
क्षेत्रसिंह	क्षेत्रसिंह (खेता)	क्षेत्रसिंह	क्षेत्रप
लाखा	लाखा	–	–
मेकल	मेकल	मोकल	मोकल
कुंभकरण	कुंभकर्ण	कुंभकरण	कुंभकर्ण
	डदा		उदयसिंह (उदा)
रायमल	रायमल्ल	रायमल	राजमल्ल
संग्राम सिंह	संग्राम सिंह रतन सिंह	संग्राम सिंह रतनसिंह	–
विक्रमादित्य	विक्रमादित्य	विक्रमादित्य	–
–	–	–	–
उदयसिंह	उदयसिंह	उदयसिंह	–
्रतापसिंह	्रतापसिंह	प्रतापसिंह	–
टमरसिंह	टमरसिंह	अमरसिंह	–
कर्णसिंह	कर्णसिंह	कर्णसिंह	–
जगत सिंह	जगत सिंह	जगत सिंह	–
श्राजसिंह	श्राजसिंह	राजसिंह	–

सदाशिव नागर "राजरत्नाकर" में इसवंश का वर्णन गुहदत्त से ही प्रारंभ करता है।[18] गुहदत्त के उपरान्त राजप्रशस्ति और अमरकाव्य में वाष्प, खुम्माण और गोविन्द के नाम मिलते हैं। राजरत्नाकर में वाष्प और खुम्माण के बीच में कालभोज का नाम अतिरिक्त मिलता है। एकलिंगमहात्म्य में भी यही स्थिति है। गोविन्द के उपरान्त महेन्द्र के नाम का उल्लेख नहीं है। राजरत्नाकर और एकलिंमहात्म्य में महेन्द्र के नाम को छोड़

दिया गया है। महेन्द्र के उपरान्त रणछोड़ भट्ट के दोनों काव्यों में आलू और सिंह वर्मा के नामों का उल्लेख है। राजरत्नाकर में आलू नाम तो दिया है पर सिंह वर्मा का नाम नहीं है। राजप्रशस्ति में सिंह वर्मा के उपरान्त शक्तिकुमार से कर्ण रावल तक बीस पीढ़ियों के नामों का उल्लेख हुआ हैं। अमरकाव्य में इन राजाओं से सम्बन्धित पत्र त्रुटित हैं। अतः इनका वर्णन उपलब्ध नहीं है, पर राजप्रशस्ति महाकाव्य में ये नाम दिये गये मिलते हैं।

राजरत्नाकर में सिंह वर्मा के उपरांत शक्तिकुमार, शालिवाहन और नरवाहन के पश्चात् चौथे क्रम में अंबा प्रसाद के नाम को छोड़ दिया गया है। पाँचवी पीढ़ी के राजा कीर्तिवर्मा के नाम का उल्लेख राजप्रशस्ति के अनुरूप करके पुनः पाँच पीढियों के नाम नरवर्मा, नरपति, उत्तम, भैरव और श्रीपुँज के नाम राजरत्नाकर में उपलब्ध नहीं हैं। एकलिंगमहात्म्य में कीर्तिवर्मा और नरवर्मा के तथा नरपति के नाम तो मिलते हैं, पर उससे आगे के तीन नाम उसमें भी नहीं हैं।

कर्ण के नाम से अंतिम राणा राजसिंह तक राजरत्नाकर का वंशक्रम प्रायः राजप्रशस्ति के समान ही है। कहीं–कहीं नामों की वर्तनी में अंतर मिलता है तो एक दो स्थानों अतिरिक्त नाम भी मिलते हैं। प्रतीत होता है कि राजरत्नाकर के रचयिता सदाशिव नागर ने एकलिंगमहात्म्य का ही आश्रय लिया है। राजप्रशस्ति में प्राप्त नामों में राजरत्नाकर और एकलिंगमहात्म्य में जहाँ अन्तर है वे स्थल निम्नांकित हैं।

राजप्रशस्ति	राजरत्नाकर	एकलिंगमाहात्म्य
भावसिंह	जादूक	भादूक
गोत्रसिंह	गातडि	गातडि
शुभयोगराज	योगराज	योगराज
वैरड	वैतड	वैरड़
वैरिसिंह	वैरिसिंह	श्रीपुँज
	कर्ण	कर्ण
	जितसिंह	चरणमल्ल
		क्षेत्रप
		खंगार
समरसिंह	समरसिंह	अमरसिंह / समरसिंह
	रतनसिंह	सुबाहु / रतनसिंह
नरपति	नरपति	हरसु

एकलिंगमहात्म्य में उक्त नामों के बाद छः पीढ़ी में जयसिंह के नाम का उल्लेख किया गया है। आश्चर्य है कि अमरकाव्य में नरपति के बाद दिनकर के नाम का उल्लेख किया गया है, जबकि राजप्रशस्ति में इस नाम का उल्लेख तक नहीं है। राजप्रशस्ति में लक्ष्मसिंह के उपरान्त उसके अनुज रत्नसिंह का नाम भी प्राप्त है, पर अमरकाव्य में नहीं। राजरत्नाकर में लक्ष्मणसिंह के उपरान्त रसिराणो, एकलिंगमाहात्म्य में रसी राणो या अरिसिंह नाम दिया है। उसके बाद इन सभी काव्यों में हमीर और क्षेत्रसिंह, क्षेत्रप या खेता के नाम का उल्लेख है, पर उसके उपरान्त राजप्रशस्ति और अमरकाव्य में आये लाखा के नाम की राजरत्नाकर और एकलिंगमाहात्म्य / पुराणखण्ड में उपेक्षा की गई है। लाखा के उपरान्त सभी काव्यों में नामावली में समानता है।

मेवाड़ का राजवंश अत्यन्त पुरातन है, इसमें कोई सन्देह नहीं है पर प्राचीन काल के प्रामाणिक उल्लेखों की अनुपलब्धता के कारण उस युग का इतिहास बहुलांश में लोकानुश्रुतियों पर आश्रित रहा है। इसमें अनेक

कल्पित बातों का समावेश हो जाना संभव है। तत्कालीन दानपत्रों और शिलालेखों से उस काल के शासकों के नाम या उनके राज्यकाल की जानकारी तो हो सकती है, पर सर्वांगपूर्ण इतिहास का ज्ञान हो पाना संभव नहीं है। महाराणा राजसिंह के काल में विरचित ये काव्य भी अधिकांश में ऐसी ही लोकानुश्रुतियों से युक्त काव्य हैं। इनमें कई इतिहास विरूद्ध बातें समाविष्ट कर दी गई हैं।

मेवाड़ की राजवंशावली

महाराणा राजसिंहकालीन काव्यों में दी गई वंशावलियों का अध्ययन प्रस्तुत करते समय मैंने राजप्रशस्ति में दी गई महाभारत से पूर्व नारायण से वृहबल तक की नामावली और उसके उपरान्त वृहद्रण से सुमित्र तक के नामों पर विचार प्रस्तुत करते समय बताया था कि इस काव्य के रचयिता रणछोड़ भट्ट ने मूलमहाभारत से ये नाम ग्रहण न करके सीधे भागवत में दी गई नामावली को ही यथावत् ग्रहण किया है। जिससे भागवत में पाई जाने वाली अशुद्धता यथावत् राजप्रशस्ति में भी प्रविष्ट हो गई हैं। सुमित्र पर्यन्त हुए 122 इक्ष्वाकुवंश के राजाओं के क्रम में कवि ने अयोध्या में राज करने वाले, वज्रनाभ से सिंहरथ पर्यन्त सूर्यवंशी राजाओं की सूची के उपरान्त सिंहरथ के पुत्र विजयभूप के द्वारा दक्षिण भारत की विजय और "आदित्य'' उपाधि धारण करके वहीं बस जाने की जानकारी दी है।

उक्त नामावलियों पर विचार प्रस्तुत करते हुए मैंने यह भी बताने का प्रयास किया है कि रणछोड़ भट्ट को इस राजवंश की महाभारत पूर्व की और पश्चात् की नामावलियों को अपने काव्य में स्थान देने की प्रेरणा "सीसोदवंशावली" से ही प्राप्त हुई थी, जिसका लेखन महाराणा राजसिंह के राज्यकाल के प्रारंभिक वर्षों में ही वि.सं. 1714 तक हो गया था। रणछोड़ भट्ट को इस काव्य से मात्र प्रेरणा ही नहीं मिली, उसको अक्षरशः स्वीकार कर संस्कृत भाषा में अनुदित कर अपने दोनों काव्यों में स्थान दिया है।

उक्त सीसोदवंशावली का अनुकरण करते समय रणछोड़ भट्ट ने विजयभूप के दक्षिण में जाकर राज्य स्थापित करने के वर्णन में चूक (भूल) हो गयी। वास्तव में उक्त वंशावली में विजयभूप के पुत्र पद्मादित्य के द्वारा दक्षिण में राज्य स्थापित करने का उल्लेख है। राजप्रशस्ति में रणछोड़ भट्ट ने विजयभूप के क्रम में ''आदित्य" उपाधिधारी चौदह राजाओं की नामावली दी है। इस नामावली में अंतिम राजा ग्रहादित्य है। यह नामावली भी उक्त सीसोदवंशावली से ही ली गई है।

कवि रणछोड़ भट्ट ने इन सभी राजाओं का उल्लेख उनके जीवन चरित्र के विषय में किसी प्रकार की सूचना या वर्णन बताये बिना दिया है। जबकि अमरकाव्य (द्वितीय सर्ग) में उसने शिलादित्य की युद्ध में मृत्यु के उपरान्त उसकी रानी कमलावती का अपनी पुत्रवधू के साथ मेवाड़ प्रदेश में आकर शरण ग्रहण करने, पुत्रवधू को पुत्र प्राप्ति, ब्राह्मणी लखमावती, और उसके पति विजयादित्य के द्वारा उसका पालन–पोषण, संस्कार सम्पन्न कर उसका केशवादित्य नाम और वैजवापायन गोत्र देने का उल्लेख किया है।[19]

प्रस्तुत काव्य में कवि ने केशवादित्य के विषय में थोड़ा विस्तार से वर्णन किया है। केशवादित्य को चित्रकूट के निकट आनन्दिपुर में (अरुणोदा, वर्तमान अरणोद) में निवास करने, वही रत्नौद्य नामक तालाब की भूमि में हाथ के स्पर्श से विशिष्ट शक्ति प्राप्त करने, तथा विन्ध्यवासिनी और राष्ट्रसेनी के पर्वत पर स्वर्ण प्राप्ति का उल्लेख किया है। उसके पुत्र नागादित्य द्वारा देवालयों से पूर्ण नागदा नगर बसाने और नागादित्य की मौर्यवंशीय की रानी हेमादे से उत्पन्न पुत्र भोगादित्य ने एकलिंग जी के सभीभालि (भोजेला) नामक ताल बनाया और उसके पुत्र देवादित्य ने देलवाड़ा नगर बसाया जो आज भी इसी नाम से जाना जाता है। यह नगर उदयपुर से 25 किलोमीटर दूरी पर बसा हुआ है। देवादित्य के पुत्र आशादित्य के द्वारा गंगोद्भव नामक तीर्थकुंड का निर्माण और आड़ (आहड़) नगर बसाने का उल्लेख किया है। उसके पुत्र कालभोजादित्य ने इन्द्र सरोवर नामक बाँध का निर्माण कराया, जो कालान्तर में भोजसर नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने नागदा में पार्वती युक्त शिव का मंदिर बनाया। उसके पुत्र ग्रहादित्य से इस वंश का नाम गहलोत पड़ा।[20]

कवि ने तीसरे सर्ग के प्रारंभ में सं. 176 में ग्रहादित्य की पत्नी पंवार–वंशजा गंगादे से घांसानगर में बाप्पा नामक पुत्र के जन्म तथा निवास का वर्णन किया है। उसने एक अन्तर कथा का आश्रय लेकर बाप्पा का विस्तार से वर्णन किया है।[21] उक्त समस्त वर्णन भी सीसोद वंशावली में यथावत् मिलता है। गांधर्व–विवाह की कथा को रणछोड़ भट्ट ने महाभारत के भारत खण्ड में प्राप्त युधिष्ठिर की कथा के समान कहा है पर वास्तव में यह कथा बगडावत लोक–काव्य में बाघा के वर्णन से यथावत् मिलती है। उसने उसी कथा को लेकर यहाँ भी वैसा ही वर्णन किया है।

बाप्पा रावल के हारीत ऋषि से संबंध, वरदान आदि की कथा उसने एकलिंगमाहात्म्य से ग्रहण की है। जिसमें वायुपुराण के संदर्भ से इस कथा को उद्धृत करना कहा गया है। कन्हव्यास ने एकलिंगमाहात्म्य में बताया है कि यह कथा उसने वायुपुराण से ली है। आधुनिक इतिहासकारों में से कविराज श्यामलदास और पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा, दोनों ने ही मेवाड़ राजवंश की वंशावली को मूलपुरुष के आरंभ से अपने इतिहास ग्रंथों में स्थान दिया है। कविराजा ने ये सभी नाम राजप्रशस्ति से ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिये हैं, जबकि पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने पौराणिक वंशावली को हरिवंश पुराण (महाभारत का खिल भाग) और भागवत का आश्रय देकर लिखा है। गुहादित्य तक की नामावली में कविराजा द्वारा ग्रहीत 150 नामों में ओझा जी ने नौ नाम कम कर दिये हैं। उन्होंने प्रारंभ के आदिनारायण से लगाकर कश्यप तक चार नाम वंशावली के अनुरुप नहीं माने हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने उक्त नामावली में से सुदेव, प्रसेनजित (विश्वसाह्व) के पुत्र तक्षक, भानु और शिवादित्य इन पाँच नामों को भी अपनी वंशावली में स्थान नहीं दिया है। शेष राजाओं के नाम/वर्त्तनी में यत्र–तत्र अन्तर होते हुए भी प्रायः समान ही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सीसोद वंशावली, ग्रंथांक 2637
2. राजप्रशस्ति, सर्ग–2, श्लोक 31

सुमित्रस्तु सुमित्रांत इक्ष्वाकोरन्वयोभवत्।
उक्ता भागवते स्कंधे नवमे ते मयोदिताः।।

3. महाभारत वनपर्व (202/2–63)
4. वही, वनपर्व (202/3)
5. राजप्रशस्ति, सर्ग 2, श्लोक 5
6. (वनपर्व 202/4–5)
7. शान्ति पर्व 49/76–77
8. राजप्रशस्ति, सर्ग 2, श्लोक 24–25
9. वैदिक सम्पति – पृ. 50–51
10. वही, पृ. 50–54
11. सीसोदवंशावली – ग्रंथांक 2637, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, शा.का. उदयपुर
12. राजप्रशस्ति, सर्ग–2, श्लोक 32–35
13. वही, सर्ग–2, श्लोक 36–37
14. राजप्रशस्ति, सर्ग–3, श्लोक 2–6
15. रावल राणा जी री वात – ग्रंथांक 876, रा.प्रा.वि.प्र. उदयपुर – यह ग्रंथ भी उक्त सीसोदवंशावली की ही संशोधित प्रतिलिपि है। इसकी रचना 18वीं शताब्दी के अंत में महाराणा अमरसिंह (द्वितीय) के काल में की गई थी।
16. रावल राणा जी री वात, ग्रंथांक 876, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर
17. मेवाड़ का धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 204
18. राजरत्नाकर, सर्ग–2, श्लोक 2
19. अमरकाव्य, सर्ग 2, श्लोक 1–11
20. अमरकाव्य, सर्ग 2, श्लोक 16–38
21. वही, सर्ग 3, श्लोक 1–4